IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, March 2020
Impact Factor: 4.819

अपभ्रंश भाषा का साहित्यिक एवं भाषिक परिचय

लालजीत राम
असि० प्रोफेसर- हिन्दी,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ०प्र०

शोध सारांश:- अपभ्रंश भाषा भारतीय आर्य भाषाओं के विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो प्राकृत और आधुनिक हिंदी के बीच सेतु का कार्य करती है। इस शोध में अपभ्रंश भाषा का साहित्यिक एवं भाषिक परिचय प्रस्तुत किया गया है। इसमें इसकी उत्पत्ति, विकास, ध्वन्यात्मक, रूपात्मक एवं व्याकरणिक विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, जैन और लौकिक साहित्य में अपभ्रंश के योगदान को रेखांकित किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अपभ्रंश ने हिंदी साहित्य अन्य आधुनिक भाषाओं की संरचना और अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया है, जिससे इसका ऐतिहासिक और भाषावैज्ञानिक महत्व सिद्ध होता है।

मूल शब्द– च्युत, तुष्यन्ति, म्लेच्छ, पतित, परिनिष्ठित, बयना, पसरेइ, अक्खर, देइ।